प्रकाशन तिथि : 15 दिसम्बर, 2019
प्रेषण तिथि : 19 दिसम्बर 2019

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 19 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

पूज्य तनसिंह जी की 40वीं पुण्यतिथि मनाई

सात दिसंबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की 40वीं पुण्यतिथि थी। इस अवसर पर देशभर में शाखा स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्वयंसेवकों तथा समाजबंधुओं ने अपने आदर्श और प्रेरक के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए एवं उनके दिखाए मार्ग पर चलायमान रखने की प्रार्थना की।

जयपुर स्थित संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में पुण्यतिथि के दिन माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में भजन सभा आयोजित की गई जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसेवक सम्मिलित हुए तथा पूज्य श्री तनसिंह जी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करके अपनी श्रद्धा प्रकट की। जोधपुर शहर में स्थित संघ कार्यालय 'तनायन' में लगने वाली शाखा में भी 7 दिसंबर को पुण्यतिथि मनाई गई, जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। इस अवसर पर पर प्रातः 7 से अपराह्न 12 बजे तक निरंतर तनसिंह जी द्वारा लिखित पुस्तक 'गीता और समाजसेवा' के पठन का कार्यक्रम रखा गया। इस दौरान पुस्तक के 9 अध्याय पढ़े गए। इसके अलावा जोधपुर में हनवंत राजपूत छात्रावास, साप्ताहिक महिला शाखा जसवंत छात्रावास, पंचवटी छात्रावास चौपासनी 'तनायन' सायंकालीन शाखा तथा जय भवानी नगर में शाखा स्तर पर पुण्यतिथि मनाई गई। इसके अलावा शेरगढ़ प्रान्त की जेठानियां शाखा में भी पूज्य श्री को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

राजपूताना समाज की वार्षिक सभा

दिल्ली में राजपूताना समाज की 21वीं वार्षिक सभा 30 नवम्बर को संपन्न हुई। मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए जलशक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह ने कहा कि राजपूत समाज ने हमेशा सर्वोच्च बलिदान दिया है, हमें आधुनिकता के बीच हमारे क्षत्रिय संस्कारों को बरकरार रखना है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

राजपूत अधिवक्ता निर्देशिका का विमोचन

जोधपुर राजस्थान उच्च न्यायालय का मुख्यालय है एवं यहां बड़ी संख्या में राजपूत अधिवक्ता कार्यरत हैं। विगत वर्षों में माननीय संघप्रमुख श्री के जोधपुर प्रवास के दौरान अनेक बार यहां कार्यरत अधिवक्ताओं का उनसे संवाद हुआ एवं उन्होंने सभी अधिवक्ताओं से संस्थागत रूप से समाज के सहयोगी बनने का आग्रह किया। इसी कड़ी में उच्च न्यायालय जोधपुर में वकालात कर रहे अधिवक्ताओं के परिचायात्मक विवरण को समेटे एक निर्देशिका बनाने का कार्य प्रारम्भ हुआ। 8 दिसम्बर को भारत के जलशक्ति मंत्री एवं जोधपुर सांसद गजेन्द्रसिंह के मुख्य आतिथ्य में मारवाड़ राजपूत सभा परिसर में कार्यक्रम आयोजित कर इस निर्देशिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए गजेन्द्रसिंह ने अधिवक्ताओं से दूरदारज से उच्च न्यायालय में आने वाले समाज बंधुओं को उचित सहायता उपलब्ध कराने का आग्रह किया एवं वकालात के पेशे में आने वाले नए अधिवक्ताओं को वरिष्ठ अधिवक्ताओं द्वारा समुचित मार्गदर्शन की आवश्यकता जताई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

बस्तर राज परिवार के वंशज पहुंचे 'संघशक्ति'

बस्तर के काकतीय वंश के 23वें वंशज व छत्तीसगढ़ राज्य युवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री कमलचन्द्र भंजदेव अपने जयपुर प्रवास के दौरान 13 दिसम्बर को माननीय संघ प्रमुख श्री से शिष्टाचार भेंट करने 'संघ शाक्ति' पहुंचे। उल्लेखनीय है कि इनके दादा एवं बस्तर के अंतिम शासक प्रवीरचंद भंजदेव आजाद भारत में जनजातिय लोगों के कल्याण के लिए संघर्ष करते रहे एवं जगदलपुर विधानसभा से 1957 में विधायक चुने गए। मध्यप्रदेश सरकार ने 25 मई 1966 को इसी संघर्ष के कारण पुलिस गोलीबारी में उनकी हत्या कर दी थी। बस्तर के आदिवासी आज भी इस परिवार को अपना संरक्षक मानते हैं एवं अभिभावक की तरह सम्मान करते है। संघ प्रमुख श्री से चर्चा के दौरान श्री कमलचन्द्र भंजदेव ने कहा कि मुझे जब पता चला कि क्षत्रियों में संस्कार निर्माण के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ काम कर रहा है तब संघ के बारे में जानकारी हासिल की, आपके बारे में लोगों से पूछा एवं मिलने का कार्यक्रम बनाया। संघ प्रमुख श्री ने उन्हें संघ साहित्य भेंट किया। श्री भंजदेव ने संघ प्रमुख श्री को बस्तर आने का निमंत्रण दिया।

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

1962 के लोकसभा चुनावों के समय की की बात है। पूज्य तनसिंह जी के पास एक जीप थी और वही उनके प्रचार का एक मात्र साधन थी। कुछ साथी स्वयंसेवकों के साथ वे उसी से विश्व के सबसे बड़े संसदीय क्षेत्र के मतदाताओं तक अपनी पहुंच बनाते थे। एक दिन रेगिस्तानी क्षेत्र में प्रचार के दौरान अपराह्न तीन बजे कहीं से गुजरते समय पूज्य श्री ने सड़क किनारे पानी के बड़े टांके के पास जीप को रोका। सभी ने पानी पिया, रवाना होते समय पूज्य श्री ने कहा कि केतली (पानी रखने का पात्र) भी भर लेना और गाड़ी में आकर बैठ गए। सभी के बैठने के बाद गाड़ी रवाना हो गई।

थोड़ी दूरी तय करने के बाद किसी ने कहा कि टांके का ढक्कन खुला रह गया और बाल्टी भी अन्दर गिर गई। सुनते ही पूज्य श्री ने गाड़ी रोकी और मोड़कर उसी स्थान की तरफ लौटने लगे। टांके पर पहुंच कर देखा तो बाल्टी टांके में तैर रही थी। अपने साफे को टांके में लटकाया। उसके सहारे अपने एक साथी को टांके में उतारा और बाल्टी सहित बाहर खींचा। बाल्टी को बाहर रखकर ढक्कन बंदकर आगे की यात्रा के लिए निकले। जरा विचार करें कि सार्वजनिक सुविधाओं के प्रति क्या हम इतने जवाबदेह एवं संवेदनशील रह पाते हैं ? क्या हम यह सोच पाते हैं कि हमारे बाद भी इन सुविधाओं का उपयोग कोई और करेगा? बड़े लोग अपने बड़े-बड़े कामों से नहीं बल्कि छोटे से छोटे काम को बड़ा मानकर ही बड़े बनते हैं। उनके व्यवहार के हर छोटे से छोटे पहलु में उनकी महानता की छाप लगी रहती है। उनके अनुसार उस सार्वजनिक टांके की सार संभाल हर नागरिक की जिम्मेदारी थी। वह केवल उनकी प्यास बुझाने के लिए नहीं बना बल्कि उस मार्ग से गुजरने वाले हर राहगीर के लिए बना था और उसे हर राहगीर की प्यास बुझाने लायक बनाने रखना उसके लाभार्थी का दायित्व था। उसके लिए यदि उनके या उनके किसी साथी द्वारा कोई भूल हुई है तो वह प्राथमिकता से सुधारी जानी चाहिए थी चाहे आगे कितना ही जरूरी काम हो। यही महानता है और ऐसे महान लोग ही अपने कर्मों की वरीयता तय कर पाते हैं।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा

इस परीक्षा का पूरा नाम 'यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन नेशनल एंट्रेंस टेस्ट/जूनियर रिसर्च फेलोशिप' है। इस परीक्षा द्वारा असिस्टेंट प्रोफेसर तथा जूनियर रिसर्च फेलोशिप हेतु अभ्यर्थियों का चयन किया जाता है। नेट परीक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थी ही सरकारी विश्विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अध्यापन हेतु पात्र है। यह परीक्षा भारत की सर्वाधिक कठिन परीक्षाओं में से एक मानी जाती है। इसमें सफलता की दर मात्र 4 से 6 प्रतिशत है। पहले यह परीक्षा CBSE द्वारा आयोजित की जाती थी परंतु अब इसका आयोजन नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (NTA) द्वारा किया जाता है।

यह परीक्षा वर्ष में दो बार आयोजित होती है- जून तथा दिसंबर माह में। परीक्षा में सम्मिलित होने की आहर्ताएं निम्नलिखित हैं-

- अभ्यर्थी भारतीय नागरिक हो।
- स्नातकोत्तर में न्यूनतम 55 प्रतिशत अंक हों (सामान्य वर्ग हेतु)
- जेआरएफ हेतु अधिकतम आयु 30 वर्ष है, जबकि असिस्टेंट प्रोफेसर हेतु आयु का बंधन नहीं है।

नेट परीक्षा पूर्णतः कंप्यूटर आधारित अर्थात ऑनलाइन होगी। परीक्षा की अवधि 3 घंटे की होगी जिसमें दो प्रश्नपत्र शामिल होंगे। प्रथम प्रश्नपत्र शिक्षण अभिरुचि से सम्बन्धित होगा तथा इसमें 50 प्रश्न होंगे। द्वितीय प्रश्न पत्र अभ्यर्थी द्वारा चुने गए विषय का होगा तथा इसमें 100 प्रश्न होंगे। सभी प्रश्न बहुवैकल्पिक प्रकार के होंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंको का होगा तथा इसमें नकारात्मक अंकन नहीं होगा।

परीक्षा में प्राप्त अंको के आधार पर अभ्यर्थियों को जेआरएफ तथा लेक्चरशिप की पात्रता प्रदान की जाती है। जेआरएफ की पात्रता 3 वर्ष के लिए तथा लेक्चरशिप की पात्रता आजीवन मान्य है। जेआरएफ की मान्यता वाले अभ्यर्थी को एम फिल में प्रवेश हेतु लिखित परीक्षा देने की आवश्यकता नहीं होती, साथ ही कई विश्वविद्यालय पीएचडी में प्रवेश भी जेआरएफ के आधार पर ही देते हैं। पीएचडी अथवा एम फिल में प्रवेश लेने पर जेआरएफ धारी को 25000 मासिक छात्रवृत्ति भी दो वर्ष तक मिलती है।

नेट/जेआरएफ परीक्षा के बारे में विस्तृत जानकारी https://ugcnet.nta.nic.in पर प्राप्त की जा सकती है।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

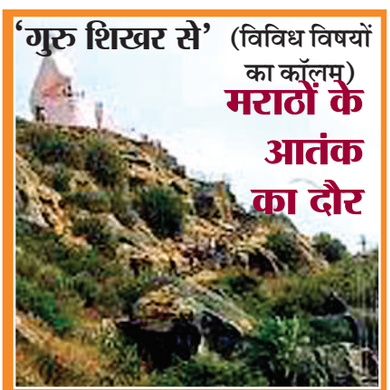

मराठों के आतंक का दौर

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

मुगल सत्ता के कमजोर हो जाने के उपरान्त अखिल भारतीय स्तर पर मराठों ने राजनीतिक शक्ति के रूप में अपना साम्राज्य फैलाना शुरू किया। प्रजा को लूटना एवं सत्ताधारियों से चौथ वसूल करना इनका मुख्य कार्य बन गया था। इनके पांच शक्ति केन्द्र नागपुर के भौंसले, पूना के पेशवा, इन्दौर के होलकर, बड़ौदा के गायकवाड़ तथा ग्वालियर के सिंधिया थे। ये 18वीं सदी के प्रारम्भ में उत्तर भारत पर छा गए। 1719 ई. में कमजोर मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला ने मराठों को चौथ वसूलने का अधिकार दे दिया। पेशवा बाजीराव ने अब राजपूताना के राज्यों से चौथ वसूलने की योजना बनाई। राजपूताना के रजवाड़े स्वतंत्र लड़कर मराठों की शक्ति का सामना नहीं कर सकते थे। अतः उन्होंने 1734 ई. मेवाड़ के हुरड़ा (भीलवाड़ा) में मराठों के विरुद्ध संयुक्त रूप से लड़ने के लिए ऐतिहासिक 'हुरड़ा सम्मेलन' आयोजित किया। राजपूताने के राज्यों का यह संघ भी कई कारणों की वजह से मराठों से नहीं लड़ सका। 1737 ई. में मराठों ने अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर हाड़ौती के कोटा एवं बूंदी में चौथ वसूलना शुरू किया। उदयपुर एवं जयपुर ने भी पेशवाओं से संधि कर चौथ देना स्वीकार किया। मराठों ने मेवाड़ में लूट मचानी प्रारम्भ कर दी।

मेवाड़ को मराठों को करोड़ों का नकद तथा वार्षिक कर देना पड़ा। इंदौर की रानी अहिल्याबाई ने धमकी भरी चिट्ठी भेजकर मेवाड़ से निम्बाहेड़ा (चित्तौड़) का परगना हथिया लिया। जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह जी मृत्यु के उपरान्त ईश्वरी सिंह के जयपुर के राजा बनने के बाद उनकी मेवाड़ की शिशोदिया रानी से उत्पन्न पुत्र माधोसिंह ने मेवाड़ व मराठों के सहयोग से आमेर पर आक्रमण कर दिया। मल्हार राव की सेना ने ईश्वरी सिंह को परास्त कर संधि के बदले भारी रकम मांगी जो असमर्थ ईश्वरी सिंह की आत्महत्या का कारण बनी। इसके बाद मराठों के सहयोग से राजा बने सवाई माधोसिंह प्रथम से भी उन्होंने भारी लगान की मांग की जो माधोसिंह के लिए असंभव थी। जयपुर में जनता ने मराठा उपद्रवियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तथा 1500 मराठा सैनिकों को घेरकर मार डाला। इस पर राजा माधोसिंह को मराठों से माफी मांगनी पड़ी एवं काफी रकम देकर पीछा छुड़ाना पड़ा। इधर मराठों ने मारवाड़ के राजा रामसिंह एवं विजयसिंह के बीच सत्ता के झगड़े में हस्तक्षेप करते हुए रामसिंह के पक्ष में जोधपुर पर आक्रमण किया। इस समय विजयसिंह नागौर में थे जहां मराठा सेना नायक जय अप्पा ने दुर्ग पर घेरा डाला तथा अपने पुत्र जनको जी को जोधपुर को घेरने भेजा। जहां सूरतसिंह चांपावत हरसौलाव तथा गोरधनदास खींची सरीखे यौद्धाओं ने मेहरानगढ़ का मोर्चा संभाला। मराठों का नागौर दुर्ग पर कड़ा घेरा था। रसद पहुंचाना भी मुश्किल था। एक दिन खोखर केशर खां व एक राजपूत सरदार ने व्यापारी के भेष में जयअप्पा के शिविर में प्रवेश किया एवं तापु के पास नहा रहे मराठा सेनापति का काम तमाम कर दिया। इससे क्रुद्ध मराठों ने नागौर दुर्ग पर आक्रमण किया तथा विजयसिंह को दुर्ग से पलायन करना पड़ा। अन्ततः विजयसिंह ने मराठों को चौथ देना स्वीकार किया तथा अजमेर को मराठों को सौंपना पड़ा। कोटा के दीवान झाला जालिम सिंह ने मराठो से सहयोग व संधि का मार्ग अपनाया। भरतपुर के जाट राजा तो मराठों के सहयोग से ही शासन कर रहे थे। जैसलमेर व बीकानेर की रियासतें सुदूर रेगिस्तानी क्षेत्र में थी जहां मराठों की जाने की हिम्मत नहीं रही। राजपूताना के राज्य मराठों की शक्ति से इतने आतंकित रहते थे कि 1761 ई. की पानीपत की लड़ाई में अफगानी अहमदशाह अब्दाली द्वारा एक लाख मराठों की हत्या कर देने के बाद कमजोर पड़े मराठों को राज्य से खदेड़ने का लाभ नहीं उठा पाए। इसके बाद मराठों ने फिर अपनी शक्ति संचित की एवं राजपूत रियासतों को लूटने लगे। यह एक बड़ी विडम्बना रही कि मराठे लुटेरे हमेशा राजपूताना को त्रस्त कर लूटते रहे तथा यहां के शासक अंग्रेजों की ईस्ट इण्डिया कं. की ओर अपनी रक्षा के लिए ताकते रहे। उस समय की राजपूताने की दशा पर यहां की यात्रा पर आए बाबू भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने लिखा है कि 'ये उद्‌मात मराठे अपना स्वरूप भूलकर राजपूताने के क्षत्रियों को दुख न देते तो यहां की वर्तमान दशा इतनी खराब न होती।'

मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा व नवनिर्मित भवन का लोकार्पण

श्री हनवंत राजपूत छात्रावास जोधपुर में 6 दिसम्बर को जीर्णोद्धारित मां चामुंडा मन्दिर की यज्ञ के साथ प्राण प्रतिष्ठा की गई व नवनिर्मित राज भंवर सिराजदेव भवन का लोकार्पण पूर्व महाराजा गजसिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद के रूप में डॉ नारायणसिंह माणकलाव के सांसद कोष से निर्मित जिम हॉल व युआईटी न्यासी के रुप में डॉ शिवसिंह राठौड द्वारा निर्मित कराए गए हॉल का भी लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए पूर्व नरेश गजसिंह ने समाज में बालिका शिक्षा पर जोर देने की बात कही व कहा कि प्रतिस्पर्धा के युग में युवाओं को मेहनत कर अपना स्थान बनाना होगा । इस अवसर पर महारानी हेमलता राजे ने कहा कि समाज में सांस्कृतिक मूल्यों को बचाए रखना बहुत जरूरी है। नारायणसिंह माणकलाव ने छात्रावास से जुड़े संस्मरण सुनाये। राजपूत शिक्षा कोष की अब तक की प्रगति की जानकारी दी व शिक्षा नेग में सहयोग का आह्वान किया । कार्यक्रम को आरपीएसी सदस्य शिवसिंह राठौड, सिवाणा विधायक हमीरसिंह भायल, मारवाड़ राजपूत सभा अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा व जेएनवीयू छात्रसंघ अध्यक्ष रविन्द्रसिंह भाटी ने भी सम्बोधित किया । छात्रावास कमेटी अध्यक्ष गोपालसिंह रुदिया ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में समाज के कई गणमान्य बंधु उपस्थित रहे।

आर्म्स एक्ट संशोधन का विरोध

भारत सरकार द्वारा आर्म्स एक्ट संशोधन बिल 2019 लाया जा रहा है जिसमें एक अनुज्ञा पत्र धारी को तीन हथियार रखने के वर्तमान प्रावधान के स्थान पर एक ही हथियार रखने का प्रावधान है। इस संशोधन बिल से परंपरागत रूप से पूर्वजों द्वारा छोड़े गए हथियारों को छोड़ना पड़ेगा। इस प्रस्तावित बिल के विरूद्ध राजपूत सभा जयपुर द्वारा 2 दिसम्बर को प्रेसवार्ता का आयोजन कर सरकार के इस प्रस्ताव का विरोध किया गया। राजपूत सभा जयपुर के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा ने कहा कि देशी रियासतों के भारत संघ में विलय के समय हुए समझौते में अनुज्ञा प्राप्त शस्त्रधारी को तीन हथियार रखने की अनुमति थी। हमारे हथियार हमारे पूर्वजों की धरोहर है एवं इनके प्रति हमारा भावनात्मक लगाव है। इसलिए हम इस प्रस्ताव का विरोध करते हैं एवं इसके लिए माननीय प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किया गया है। यदि सरकार सकारात्मक निर्णय नहीं करेगी तो आंदोलन किया जाएगा। प्रेसवार्ता में मारवाड़ राजपूत सभा अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा भी उपस्थित रहे।

भीलवाड़ा व रानीवाड़ा में बैठक

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा सकारात्मक सामाजिक भाव वाले समाज बंधुओं के साथ संवाद अनवरत जारी है। 1 दिसम्बर को भीलवाड़ा जिले की बैठक रखी गई जिसमें फाउण्डेशन का परिचय देते हुए इसके उद्देश्यों पर विस्तार से चर्चा की गई। श्री कुंभा ट्रस्ट भीलवाड़ा में आयोजित इस बैठक में शंकर सिंह रेह, रणजीतसिंह झालरा, कानसिंह खारड़ा ने भी अपने विचार रखे। उद्देश्यों पर चर्चा करते हुए संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली ने कहा कि इन उद्देश्यों में से आपकी पसंद के अनुसार हर व्यक्ति को एक-एक उद्देश्य पर काम प्रारम्भ करना चाहिए। फाउण्डेशन की विगत 11 माह की यात्रा को उदाहरण सहित बताया गया कि सकारात्मक काम को सदैव सहयोग मिलता है एवं दैवीय शक्तियों का भी आशीर्वाद व प्रोत्साहन मिलता है। यह फाउण्डेशन ने अपनी मात्र 11 माह की यात्रा में अनुभव किया है इसलिए हम सबको यथाशक्ति इसमें जुटना चाहिए। बैठक का संचालन सह संयोजक आजादसिंह शिवकर ने किया। 8 दिसम्बर को जालोर जिले के रानीवाड़ा उपखण्ड स्थित राजपूत छात्रावास में फाउण्डेशन की बैठक रखी गई जिसमें रानीवाड़ा व जसवंतपुरा क्षेत्र के समाज बंधु सम्मिलित हुए। बैठक में विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन की अवधारणा को बिन्दुवार स्पष्ट किया गया। उपस्थित समाज बंधुओं ने इस अवधारणा से प्रत्येक राजपूत को परिचित करवाने की आवश्यकता बताई और इसके लिए रानीवाड़ा व जसवंतपुरा क्षेत्र में विभिन्न गांवों में बैठकें करने का निर्णय लिया। आगामी महीनों में जसवंतपुरा, रामसीन, कागमाला, जाखड़ी, सेवाड़ा, करड़ा, सुरावा, डूंगरी, बडगांव आदि स्थानों को बैठक के लिए चिह्नित किया गया एवं इसके लिए उपस्थित सहयोगियों में से जिम्मेदारी तय की गई। सभी ने तय किया कि माह में कम से कम दो स्थानों पर बैठकें की जाए।

शताब्दी वर्ष के तहत मुंबई में कार्यक्रम

संघ के द्वितीय संघ प्रमुख पूज्य आयुवान सिंह हुडील के जन्म शताब्दी वर्ष के तहत मुंबई की महाराव शेखाजी शाखा अंधेरी में 8 दिसम्बर को कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में पूज्य माट्साब के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का परिचय दिया गया। संभाग प्रमुख नीरसिंह सिंधाणा ने परमेश्वरीय विधान के अनुरूप कर्तव्य कर्म करने की बात कही।

सराहनीय पहल

पाली जिले के सुमेरपुर के निकट स्थित बांकली गांव निवासी खेतसिंह ने अपनी पुत्री के टीके के रूप में दिए जाने वाले 5,51,000 रुपए वर पक्ष द्वारा अस्वीकार करने पर राजपूत कन्या छात्रावास खीमेल (पाली) को भेंट कर दिए। खेतसिंह की इस पहल की सब ओर सराहना की जा रही है।

राणावास में राव कूंपा जयंती मनाई

राठौड़ों की कूंपावत शाखा के मूल पुरुष राव कूंपाजी की 517वीं जयंती 9 दिसम्बर को राणावास स्थित श्री गोविन्द राजपूत शिक्षण संस्थान में मनाई गई। जैन संत अमृतमुनि, डॉ. वरुण मुनि, संत समताराम आदि के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री एवं बाली विधायक पुष्पेन्द्रसिंह ने राव कूंपा जी को प्रेरणादायी व्यक्तित्व बताते हुए उनके त्याग व बलिदान का अनुसरण करने की आवश्यकता जताई। समारोह में प्रतिभावान विद्यार्थियों, विशिष्ट प्रतिभाओं एवं आर्थिक सहयोग करने वाले समाज बंधुओं का सम्मान किया गया। जैन संत डॉ. वरुण मुनि ने कूंपाजी के नाम से गो सेवा केन्द्र स्थापित करने की घोषणा की। इस अवसर पर कूंपाजी की अश्वारूढ प्रतिमा स्थापित करने के लिए सहयोग राशि की घोषणा की गई। समारोह को मारवाड़ जंक्शन प्रधान सुमेरसिंह, जयंती समिति के अध्यक्ष राजेन्द्रसिंह राठौड़, नारायणसिंह आकड़ावास, हनुमानसिंह खांगटा, हनुमानसिंह भैंसाणा आदि ने संबोधित किया।

राणी रुपादे मंदिर की वर्षगांठ संपन्न

बालोतरा (बाड़मेर) के निकट स्थित माळाजाळ पाळिया के राणी रुपादे मंदिर की वर्षगांठ 1 दिसम्बर को समारोह पूर्वक मनाई गई। चौदहवी शताब्दी में भक्ति व धर्म की अविरल धारा में सहायक बने रावल मल्लीनाथ एवं राणी रुपादे के जीवन चरित्र का इस अवसर पर स्मरण किया गया। समारोह की पूर्व संध्या पर जागरण का आयोजन हुआ। समारोह में संतों का सम्मान किया गया। राणी रुपादे संस्थान के अध्यक्ष रावल किशनसिंह के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में गाजियाबाद के दूदेश्वर महादेव मंदिर महंत नारायणगिरी, दाखा मंहत नरेशगिरी, सिणली महंत शंकर भारती आदि संत उपस्थित रहे। संचालन चंदनसिंह चांदेसरा ने किया व संस्थान के सचिव दलपतसिंह ने आभार प्रकट किया।

गुड़ा कलां (सोजत) में छतरियों की प्राण प्रतिष्ठा

पाली जिले की सोजत तहसील के गुड़ा कलां गांव में 6 दिसम्बर को सती माता की पांच छतरियों व जुंझार जी की एक छतरी के जीर्णोद्धार के बाद समारोहपूर्वक प्राण प्रतिष्ठा की गई। समारोह में संत समतारामजी, महेन्द्रसिंह हाफां, कर्नल गुमानसिंह, मानवजीतसिंह रायपुर, हनुमानसिंह भैंसाणा, भंवरसिंह सहित छतरी पुनरुद्धार में सहयोगियों का बहुमान किया गया। वक्ताओं ने कहा कि ये स्मारक हमारे पूर्वजों के त्याग एवं बलिदान की प्रतीक है। हमें इनके माध्यम से उस त्याग और बलिदान की प्रेरणा लेनी चाहिए।

संपादकीय

कर्म, कर्म योग और हम

योग का सामान्य अर्थ जोड़ना होता है। जब जोड़ होता है तो दो पृथक इकाइयां एक नई इकाई में परिवर्तित हो जाती हैं जिसमें वे दोनों इकाईयां समाहित होती हैं। जैसे 2 और 7 को जोड़ते हैं तो 9 बनते हैं। 9 न तो 2 है और न ही 7 है लेकिन एक नई इकाई है और यह ऐसी इकाई है जिसमें 2 भी है और 7 भी है। यही योग है। वर्तमान में विभिन्न लोग विभिन्न प्रकार से योग की परिभाषा करते हैं लेकिन योग का सामान्य एवं सरल अर्थ तो यही है। प्रायः योग को आध्यात्मिक अर्थों में लिया जाता है ऐसे में इसका आध्यात्मिक अर्थ भी दो इकाईयों का जोड़ ही माना जाएगा। ऐसे में महापुरुष आत्मा एवं परमात्मा के मिलन को योग कहते हैं। महर्षि पतंजलि ने अपने योग सूत्र में इसका विस्तार से वर्णन किया और परम्परागत रूप से इसे ही योग की प्रक्रिया माना जाता है। महर्षि पतंजलि ने अध्यात्म के नाम पर पनपी विभिन्न मिथ्या धारणाओं के बीच ईश्वराभिमुख होकर योग की यात्रा के क्रमबद्ध सोपान प्रस्तुत किए लेकिन दुर्भाग्य से कालांतर में उनके इस सूत्र को भी अपनी सुविधानुसार परिभाषित कर मिथ्या धारणाएं गढ़ी जा रही हैं और उनके मूल मंतव्य को विस्मृत किया जा रहा है। लेकिन हमारे इस आलेख का वरैण्य विषय तो पतंजलि का योग सूत्र न होकर कर्म, कर्मयोग और हम हैं। कर्म और कर्मयोग की चर्चा होते ही चिंतन एवं चर्चा का आधार भगवान श्री कृष्णोक्त गीता बन जाती है। गीता की यही विशेषता है कि वह हमारे कर्म को कर्मयोग बनाती है। उसे वैज्ञानिक आधार प्रदान कर सामान्य जीवन व्यवहार को ही आराधना बना देती है, आध्यात्मिक बना देती है। पूज्य तनसिंह जी ने गीता की इस विशेषता को अपने साहित्य में, विशेष रूप से 'गीता और समाज सेवा' में सविस्तार विभिन्न पहलुओं सहित प्रकट किया है। गीता किसी भी कर्म को दो विशेषताएं प्रदान कर उसे कर्मयोग बना देती है। पहली विशेषता है निष्काम भाव और दूसरी है कर्तापन के भाव से मुक्ति। वैसे तो कर्म निष्काम ही होते हैं क्योंकि उनका फल हमारी इच्छा के अनुरूप नहीं होता। फल तो जो होना होता है वही होता है फिर कामना करने से भी क्या अर्थ? गीता इसी बात को समझाती है। गीता के भगवान कहते हैं कि कर्म को करने के पीछे यदि कोई कामना न रखकर कर्तव्य भाव से किया जावे तो वह योग बन जाता है। कर्म जो स्वाभाविक रूप से हमारे लिए करने योग्य है वही करना है लेकिन बस उसे कर्तव्य भाव से करना है। फायदे की गणित का चिंतन छोड़कर करना है और यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारा वह कर्म कर्मयोग बन जाता है। आराधना बन जाता है। हमारा सामान्य जीवन व्यवहार अध्यात्म से परिपूर्ण हो जाता है। पूज्य तनसिंह जी द्वारा हम सबके लिए प्रस्तुत सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली हमें इसी का अभ्यास करवाती है। हमारे कर्म को कर्मयोग बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है, हमारे सामान्य जीवन व्यवहार को आराधना में परिवर्तित करती है।

गीता के अनुसार कर्म की दूसरी विशेषता है कर्तापन के भाव से मुक्ति। यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो हमारा कर्म योग बन सकता है। इसे करने के लिए गीता यह समझाती है कि करने वाला वास्तव में कौन है? समझाने के लिए भगवान अर्जुन को अपना विराट रूप दिखाकर समझाते हैं कि तुमें जो कुछ करने के लिए कहा जा रहा है वह तो पहले से हो चुका है। तुम्हें तो मरे हुओं को ही मारना है। तुम्हे तो केवल निमित्त मात्र बनना है, माध्यम मात्र बनना है। जब हम इस दिशा में सोचना प्रारम्भ करते हैं तो हमारे सामान्य जीवन व्यवहार में घटित घटनाओं का विश्लेषण ही हमें स्पष्ट कर देता है कि कर्ता तो हम नहीं हैं। यदि कर्ता हम होते तो फिर परिणाम भी हमारे हाथ में होता लेकिन ऐसा होता नहीं है। कई बार परिणाम हमें आश्चर्य चकित कर देते हैं और हमारी अपेक्षाओं से कहीं दूर ले जाकर छोड़ देते हैं अर्थात अपेक्षा से बहुत अधिक दे देते हैं कि तब थोड़ी सी गंभीरता से चिंतन करें तो पाते है कि क्या करने वाला मैं था? यदि मैं होता तो यह मेरे अनुमान से अधिक कैसे हो गया? इस प्रकार दोनों ही विशेषता यह स्पष्ट करती हैं कि ना तो करना हमारे वश में है और ना ही परिणाम हमारे वश में है बल्कि हम तो पूर्जा मात्र हैं जिसके माध्यम से कर्म घटित होता है। अपने आपको पूर्जा मानकर इस वास्तविकता को स्वीकार करने पर ही हमारा कर्म कर्मयोग बन जाता है। संघ की पूरी साधना हमें इसी ओर ले जाती है। इसे और अधिक स्पष्ट भाषा में समझें तो संघ की साधना हमें इस वास्तविकता से रूबरू करवाती है, स्वीकार करने की क्षमता पैदा करती है कि हमारी कामना व हमारा कर्तापन दोनों ही मिथ्या धारणा हैं और इस मिथ्या धारणा से निवृत होने के लिए हमें अभ्यास करवाती है। हमारी अभ्यास में तत्परता ही हमारे कर्म को कर्मयोग बनाने की तीव्रता निर्धारित करती है।

खरी-खरी

'बयानों के मायने'

विगत दिनों जोधपुर में राजस्थान उच्च न्यायालय के नवीन भवन के उद्घाटन के समय भारत के माननीय राष्ट्रपति ने कहा कि 'राजाओं के राज में आम आदमी घंटी बजाकर न्याय की गुहार कर लेता था लेकिन अब न्याय हासिल करना बहुत खर्चीला है। हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट तक गरीबों का पहुंचना नामुमकिन है।' यह बयान अपने आप में भारत की न्याय व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न है और यह प्रश्न चिह्न व्यवस्था के मुखिया द्वारा लगाया गया है, ऐसे में क्या व्यवस्था असफल नहीं हो गई है? व्यवस्था पर प्रश्न केवल राष्ट्रपति महोदय ने उठाया है ऐसा ही नहीं है बल्कि अभी हाल ही में हैदराबाद में हुई घटना एवं उसके बाद हुए एनकाउंटर पर देश में जश्न का माहौल भी भारत की वर्तमान व्यवस्था पर गंभीर प्रश्न है। अरविंद केजरीवाल व कुमार विश्वास ने व्यवस्था की इस असफलता को लेकर बयान दिए वे भी व्यवस्था पर प्रश्न ही थे और यह भी उल्लेखनीय है कि केजरीवाल भी एक राज्य की सरकार के मुखिया हैं। मुखियाओं की ही बात करें तो राजस्थान की सरकार ने मुखिया ने भी एक वास्तविकता का बखान राजस्थान उच्च न्यायालय के भवन के उद्घाटन समारोह में कर ही दिया कि भारत की राजनीतिक व्यवस्था को संचालित करने वाली पूरी चुनाव प्रणाली काले धन पर आधारित है और राजनीति में आने वाला हर व्यक्ति पहले ही चुनाव से इसका सहारा लेना प्रारम्भ कर देता है। ऐसे में उससे कैसे अपेक्षा की जा सकती है कि वह भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कटिबद्ध होगा। माननीय मुखिया जी की बात तो सही है लेकिन प्रश्न यह भी उठता है कि 45 वर्षों से वे राजनीति में सक्रिय रहे हैं, कब और कैसे उन्होंने इस व्यवस्था को ठीक करने का प्रयास किया यह भी बताते, नहीं तो यही माना जाए कि वे भी इसी व्यवस्था की कठपुतली हैं जिसे वे स्वयं सही नहीं मानते पर फिर भी व्यवस्था को ठीक करने की अपेक्षा व्यवस्था में बने रहने पर पूरा ध्यान केन्द्रित किए हुए हैं। इन मुखिया जी के विपक्षी एक मंत्री जी ने इनके बयान पर प्रतिक्रिया दी कि क्या मुखिया जी इतने चुनाव काले धन से लड़ते आए हैं तो यहां भी मंत्री जी के बयान का क्या यह अर्थ निकाला जाए कि वे इस बात से अनभिज्ञ हैं कि वे चुनावों में काले धन के उपयोग होता है? खैर कुछ बयान ऐसे होते हैं जो देने के लिए ही दिए जाते हैं और इसलिए दे दिए जाते हैं। लेकिन बात तो मुखियाओं के बयानों की चल रही थी तो भारत की न्याय व्यवस्था के मुखिया का भी बयान इन दिनों आया कि न्याय कभी आनन-फानन में नहीं किया जाना चाहिए। अगर न्याय बदले की भावना से किया जाए तो अपना मूल चरित्र खो देता है। निश्चित रूप से माननीय की बात सही है कि न्याय इतना आनन-फानन में किया जाना चाहिए और ना ही इतनी देरी से किया जाना चाहिए कि उसका कोई अर्थ ही न रह जाए। जिस प्रकार आनन-फानन में किया न्याय अपना स्वरूप खोता है उसी प्रकार देर से किया न्याय भी अपना स्वरूप खोता है। साथ ही माननीय की यह बात भी विचारणीय है कि न्याय बदले की भावना से नहीं किया जाना चाहिए और न्याय करने वाले को किसी प्रकार की पूर्व धारणा से परे जाकर ही न्याय करना चाहिए लेकिन जो न्याय मांग रहा है वह तो उसके साथ होने वाले अन्याय का बदला ही चाहता है। ऐसे में बदला पूरा होने पर उसके जश्न पर प्रश्न उठाना तो लाजमी नहीं है। जिस हैदराबाद एनकाउंटर को लेकर यह बयान आया उसमें निश्चित रूप से न्यायिक प्रक्रिया को लेकर प्रश्न उठाए जा सकते हैं यदि एनकाउंटर नकली है तो लेकिन इस एनकाउंटर से जिनके बदले की भावना को शांति मिली उनकी प्रसन्नता पर तो प्रश्न कैसे उठाए जा सकते हैं और यदि प्रश्न उठाना ही चाहिए तो यह उठाना चाहिए कि उचित प्रक्रिया के अभाव में हुए इस न्याय पर इतनी प्रसन्नता जनता में क्यों है? यदि ऐसा है तो ठीक व्यवस्था को किया जाना चाहिए जिसके आप मुखिया है। बयानों की बात की जाए तो एक वरिष्ठ कम्युनिष्ट नेता ने आश्चर्यजनक बयान दिया कि बदले की भावना से कुछ नहीं किया जाना चाहिए। पाठक पूछ सकते हैं कि इसमें आश्चर्य की क्या बात है तो इसमें आश्चर्य की बात यह है कि सदैव बदला लेने की बात करने वाले ही कह रहे हैं कि बदला नहीं लेना चाहिए। मजदूरों को मालिकों से, शासित को शासकों से, शोषितों को शोषकों से बदला लेने को उकसाने वाले लोग यदि बदला नहीं लेने की बात करने लगे तो आश्चर्य ही होता है। लोकसभा में भी कुछ बयान दिए गए। एक पार्टी के नेताजी बोले कि देश का बंटवारा सावरकर के द्विराष्ट्र के सिद्धान्त के कारण हुआ। लेकिन समझ में नहीं आता कि क्या सावरकर उस समय इतने मजबूत थे कि वे भारत की तत्कालीन व्यवस्था पर एकछत्र कब्जा जमाए लोगों को बंटवारे के लिए मजबूर कर सकें। लेकिन फिर बात तो अंत में यही समझ में आती है कि बयान है, बयानों का क्या? देने होते हैं इसलिए दे दिए जाते हैं और हम उलझे रहते हैं।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	चार दिवसीय प्र.शि. बालिका	22.12.2019 से 25.12.2019 तक	**पिपलिया मंडी**, मंदसौर (मध्यप्रदेश)। (नेचुरल पब्लिक स्कूल) **सम्पर्क सूत्र :** 9926685051, 7000207921 8085207733
02.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	22.12.2019 से 25.12.2019 तक	जीएसएम स्कूल, **महागढ़**, नीमच (मध्यप्रदेश)। **सम्पर्क सूत्र :** 9425974693, 8349912938
03.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	22.12.2019 से 25.12.2019 तक	सारलेश्वर महादेव मंदिर, **पीठ** (सीमलवाड़ा) डूंगरपुर **सम्पर्क सूत्र :** 9783238540, 9983672448
04.	चार दिवसीय प्र.शि. बालिका	25.12.2019 से 28.12.2019 तक	शिवम मैरिज गार्डन, नैनवा रोड, **बूंदी**। सम्पर्क सूत्र : 9602064222, 9950663010
05.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	भोजराजसिंह की ढाणी, **जैसलमेर** रामगढ़ जैसलमेर मार्ग पर स्थित।
06.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	**सिरसला,** नागौर।
07.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	**भादला** (बीकानेर)। नोखा के लखारा चौराहे व बीकानेर के गंगानगर चौराहे से बस।
08.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	**महरोली** (सीकर)।
09.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	26.12.2019 से 29.12.2019 तक	आशापुरा माता मंदिर, **गैलाना**। तहसील सुवासरा मंदसौर (मध्यप्रदेश) **सम्पर्क सूत्र :** 9977800497, 9926738399, 9754218326
10.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	28.12.2019 से 31.12.2019 तक	महाराज मूलसिंह डिग्री कॉलेज। **लाखेरी**। **सम्पर्क सूत्र :** 9530222327, 9828024189
11.	दंपती शिविर 35 वर्ष तक की दंपती हेतु	02.01.2020 से 05.01.2020 तक	आलोक आश्रम, **बाड़मेर**।
12.	दंपती शिविर 35-50 वर्ष तक की दंपत्ती हेतु।	09.01.2020 से 12.01.2020 तक	आलोक आश्रम, **बाड़मेर**

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

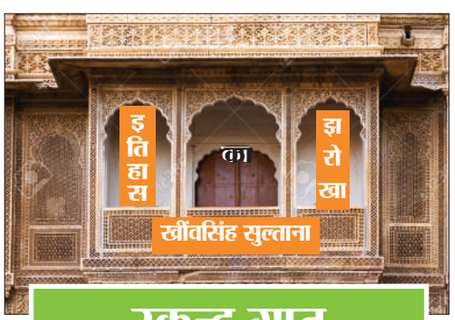

स्कन्द गुप्त

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के बाद कुमारगुप्त गुप्त साम्राज्य का शासक बना। कुमार गुप्त को विरासत में अपने पिता चन्द्रगुप्त से विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ, उसने उस विशाल साम्राज्य को अक्षुण्ण रखा। वह साम्राज्य में शांति और व्यवस्था बनाए रखने में सफल रहा। उसके शासन काल में भारत का विदेशों से व्यापार अत्यधिक बढ़ा और देश में आर्थिक समृद्धि चहुंओर फैल गई। उसके शासन काल की उल्लेखनीय घटना नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना है जो विश्व के सर्वकालिक श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में शुमार होता है। कुमार गुप्त का 40 वर्षीय लम्बा शासनकाल अन्तिम कुछ वर्षों को छोड़कर पूर्णतया शक्ति और समृद्धि का काल रहा।

स्कन्दगुप्त : कुमारगुप्त की मृत्यु के बाद स्कन्दगुप्त 455 ई में गुप्त साम्राज्य का शासक बना। यद्यपि स्कन्दगुप्त ज्येष्ठ पुत्र नहीं था परन्तु उसकी योग्यता के कारण कुमार गुप्त ने उसे अपना उत्तराधिकारी चुना। कुमार गुप्त के शासन काल के अंतिम वर्षों में पुष्यमित्रों ने विद्रोह कर दिया था। पुष्यमित्र नर्मदा के किनारे रहने वाली एक युद्धप्रिय जाति थी। पुष्यमित्रों का विद्रोह इतना प्रबल था कि उसने गुप्त साम्राज्य की नींव हिला डाली। पुष्यमित्रों के विद्रोह का दमन करने के लिए युवराज स्कन्दगुप्त को भेजा गया, स्कन्दगुप्त ने लगातार तीन माह तक युद्ध क्षेत्र में रहकर पुष्यमित्रों का दमन किया। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

शहीद कानसिंह के नाम विद्यालय का नामकरण

बडोड़ागांव (जैसलमेर) स्थित रा.बा.मा.वि. बडोड़ागांव का नामकरण बडोड़ागांव के शहीद कानसिंह सोलंकी के नाम से किया गया है। 19 नवम्बर को इस उपलक्ष में तारातरा महंत प्रतापपुरी के सानिध्य एवं उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी के मुख्य आतिथ्य में समारोहपूर्वक इसकी घोषणा की गई। कार्यक्रम में जैसलमेर के पूर्व यू.आई.टी. चेयरमैन जितेन्द्रसिंह, जिला प्रमुख अंजना मेघवाल, चैतन्यराजसिंह जैसलमेर, विक्रमसिंह नाचना, छात्रसंघ अध्यक्ष डूंगरसिंह, डेलासर महंत दीनपुरी के साथ आसपास के गांवों के सैंकड़ो लोग शामिल हुए। उल्लेखनीय है कि शहीद कानसिंह का जन्म 1950 में हुआ। वे 14 अक्टूबर 1968 को सेना की मैकेनाइज्ड इन्फेन्ट्री में भर्ती हुए। वे 10 नवम्बर 1982 को सेना के सामान से लदी ट्रेन में आग लगने पर उसे बुझाने एवं अपने साथी नायक श्यामसिंह को बचाने के प्रयास में घायल हो गए। उनका 65 प्रतिशत शरीर जल गया। आगरा के सेना अस्पताल में इलाज के दौरान 19 नवम्बर 1962 को उनका देहावसान हुआ। भारत सरकार ने उनकी शहादत का सम्मान करते हुए 1985 के गणतंत्र दिवस समारोह में उन्हें मरणोपरांत शौर्य चक्र प्रदान किया।

जयपहाड़ी में शहीद उगमसिंह की प्रतिमा का अनावरण

झुंझुनूं जिले के जयपहाड़ी में 7 दिसम्बर को 31 जुलाई 1943 को जापान में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान शहीद हुए उगमसिंह की मूर्ति का अनावरण सैनिक कल्याण बोर्ड के पूर्व चेयरमैन प्रेमसिंह बाजौर के मुख्य आतिथ्य में किया गया। अध्यक्षता श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने शहीदों को देवताओं की तरह पूजने की आवश्यकता जताई। कार्यक्रम में 9 शहीद परिवारों, 2 स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों व मूर्तिकार वीरेन्द्रसिंह खुड़निया का सम्मान किया गया। संचालन प्रमेन्द्र सिंह जयपहाड़ी ने किया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल

Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख निल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

बनासकांठा के जड़िया में शिविर संपन्न

गुजरात में संघ के बनासकांठा प्रांत में जड़िया गांव में 30 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ जिसमें जड़िया, जाड़ी, चारड़ा, लवारा, रानेर, मांडल, नेगाला, गोला, वलादर, थलसर व कुणघेर गांवों के 70 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर प्रमुख अजीतसिंह कुणघेर ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ क्षत्रियत्व की वैश्विक युनिवर्सिटी है जो शाखा व शिविरों के माध्यम से समाज की नवपीढ़ी को गीता वर्णित क्षात्र धर्म का अभ्यास करवाती है। व्यवस्थापक का दायित्व गोपालसिंह जड़िया ने गांव वालों के सहयोग से निभाया।

630 राजपूत चयनित

गुजरात सरकार द्वारा आयोजित पुलिस कांस्टेबल परीक्षा में 630 राजपूत युवा कांस्टेबल के रूप में चयनित हुए हैं। यह संख्या सामान्य वर्ग के लिए 3537 पदों का लगभग 18 प्रतिशत है।

(पृष्ठ पांच का शेष)

स्कन्द गुप्त...

पुष्यमित्रों के विद्रोह को कुचलने के बाद उस क्षेत्र में योग्य अधिकारियों की नियुक्ति कर शांति व सुव्यवस्था की स्थापना की। पुष्यमित्रों पर विजय प्राप्त कर जब स्कन्दगुप्त वापिस लौटा तब तक पिता कुमार गुप्त की मृत्यु हो चुकी थी। स्कन्दगुप्त के शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि हूणों पर विजय है। हूण मध्य एशिया की एक बर्बर, असभ्य, लड़ाकू जाति थी जिन्होंने मध्य एशिया से निकल कर दो शाखाओं में विभाजित हो अपने अत्याचारों से प्राचीन सभ्यताओं को नष्ट कर दिया। हूणों की एक शाखा ने सुदूर पश्चिम में विशाल रोमन साम्राज्य को नष्ट कर दिया। इनके अत्याचारों और बर्बरता से यूरोप त्राहि-त्राहि कर उठा। हूणों की दूसरी शाखा ने फारस के ससानी साम्राज्य को नष्ट कर भारत पर आक्रमण किया। भारत पर आक्रमण करने वाली शाखा का नेता खुशनेवाज था। हूणों का मुकाबला करने के लिए स्कन्द गुप्त आगे बढ़ा। संभवतः यह युद्ध भारत की उत्तरी पश्चिमी सीमा पर गांधार क्षेत्र में हुआ था। हूणों की सेना स्कन्दगुप्त के सेना के मुकाबले दुगुनी थी। यह युद्ध बड़ा भयंकर था युद्ध की भयंकररता का संकेत भीतरी स्तम्भ लेख से मिलता है जिसके अनुसार हूणो के साथ युद्ध क्षेत्र में स्कन्दगुप्त की भुजाओं के प्रताप से पृथ्वी कांप उठी और भीषण बवंडर उठ खड़ा हुआ। स्कन्दगुप्त द्वारा हूणों को बुरी तरह से पराजित किया गया और उन्हें भारत की सीमा से बाहर उनके मूल स्थान की ओर खदेड़ दिया गया। युद्ध के उपरान्त स्कन्दगुप्त ने उत्तरी पश्चिमी सीमा क्षेत्र में योग्य प्रान्तपतियों की नियुक्ति कर सीमाओं को सुरक्षित किया। इसके अतिरिक्त स्कन्दगुप्त ने नागवंशी व वाकाटक शासकों को भी पराजित किया। स्कन्दगुप्त एक उदार शासक था, वह प्रजावत्सल व लोकोपकारी शासक था जिसे अपनी प्रजा के सुख-दुख की निरन्तर चिन्ता बनी रहती थी, उसका चरित्र निर्मल तथा उज्ज्वल था। उसकी प्रजा उससे अत्यधिक प्रेम करती थी। उसकी कीर्ति का बखान बालक से लेकर प्रौढ तक सभी प्रसन्नतापूर्वक करते थे। स्कन्दगुप्त एक महान विजेता, अपने वंश की प्रतिष्ठा का प्रतिस्थापक प्रजावत्सल शासक था। वह अपने समय के लिए सर्वथा उपयुक्त शासक था, वह गुप्त वंश के महानतम शासकों की श्रृंखला का अन्तिम शासक था। हूणो के आक्रमण से भारतीय संस्कृति और सभ्यता की रक्षा के लिए हम सदैव उसके ऋणी रहेंगे। **(क्रमशः)**

राजस्थान वक्फ बोर्ड के नव निर्वाचित अध्यक्ष खानू खान बुधवाली 10 दिसम्बर को माननीय संघ प्रमुख श्री से शिष्टाचार भेंट करने पहुंचे। संघ प्रमुख श्री ने यथार्थ गीता भेंट की एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी।

संघर्ष के समकालीन साधन

10/- रुपए में राज करने का अधिकार - सूचना का अधिकार

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 (आर.आई.टी. एक्ट-2005)

सूचना के अधिकार के तहत यदि लोक सूचना अधिकारी 30 दिवस में सूचनाएं उपलब्ध नहीं करवाता है तो आप प्रथम अपील कर सकते हैं। यदि प्रथम अपील अधिकारी भी 30 दिवस के भीतर सूचना न दे तो द्वितीय अपील की जाती है।

प्रथम अपील

- प्रथम अपील आवेदन की दिनांक से 30 दिवस के उपरान्त व 60 दिवस तक ही प्रस्तुत की जा सकती है। यदि विभाग द्वारा आवेदन के सम्बन्ध में कोई पत्राचार किया गया है तो अंतिम पत्राचार से आगामी 30 दिवस उपरान्त तक प्रथम अपील प्रस्तुत की जा सकती है। प्रथम अपीलीय अधिकारी को 30 दिवस में अथवा विशेष परिस्थिति में कारण दशार्ते हुए 45 दिवस में अपील पर निर्णय करना अनिवार्य है।
- अपील निःशुल्क प्रस्तुत होगी।
- अपील के साथ आवेदन की प्रति व सम्बंधित विभाग या कार्यालय से यदि कोई पत्राचार हुआ है तो उसकी भी प्रति संलग्न कर दो प्रतियों (सेट) में प्रस्तुत करनी है।
- अपील की 1 प्रति अपीलार्थी अपने पास रखे। यदि प्रथम अपील के बाद भी सूचना नहीं मिले तो राजस्थान सूचना आयोग जयपुर में द्वितीय अपील के साथ प्रस्तुत की जा सके।
- अपील डाक द्वारा भेजें तो रजिस्ट्री या स्पीड पोस्ट से ही भेजे। जिसकी रसीद को सुरक्षित रखें।
- प्रत्येक विभाग में पृथक पृथक अपीलीय अधिकारी होते हैं, गलत अधिकारी को अपील मान्य नही है।

द्वितीय अपील

- द्वितीय अपील प्रथम अपील की दिनांक से 30 दिवस के उपरान्त व 60 दिवस तक ही प्रस्तुत की जा सकती है। यदि विभाग द्वारा अपील के सम्बन्ध में निर्णय या कोई पत्राचार किया गया है तो अंतिम पत्राचार से आगामी 30 दिवस उपरान्त तक द्वितीय अपील प्रस्तुत की जा सकती है।
- द्वितीय अपील श्रीमान मुख्य सूचना आयुक्त, राजस्थान राज्य सूचना आयोग, झालाना लिंक रोड़, ओटीएस चौराहा,जे एल एन मार्ग, जयपुर, पिनकोड- 302017 में प्रस्तुत की जाती है।
- द्वितीय अपील निःशुल्क प्रस्तुत होगी।
- अपील के साथ आवेदन मय पोस्टल ऑर्डर, प्रथम अपील मय सम्बंधित विभाग की प्राप्ति रसीद या डाक रसीद व सम्बंधित विभाग या कार्यालय से यदि कोई पत्राचार हुआ है तो उसकी भी प्रति संलग्न कर दो प्रतियों (सेट) में प्रस्तुत करनी है।
- अपील के साथ संलग्न समस्त दस्तावेजों को स्वप्रमाणित करना अनिवार्य है।
- अपील की 1 प्रति अपीलार्थी अपने पास रखे। राजस्थान सूचना आयोग जयपुर में द्वितीय अपील की सुनवाई के समय आवश्यकता हेतु।
- अपील डाक द्वारा भेजें तो रजिस्ट्री या स्पीड पोस्ट से ही भेजें। जिसकी रसीद को सुरक्षित रखें।
- राजस्थान राज्य सूचना आयोग द्वारा प्रत्यर्थी को 21 दिवस का अपिलोतर व दोनों पक्षों की सुनवाई की तारीख बाबत नोटिस जारी किया जाता है। संबंधित लोक सूचना अधिकारी को सुनवाई की दिनांक व समय पर कोर्ट में उपस्थित रहने हेतु नोटिस के माध्यम से पाबन्द किया जाता है।

प्रताप सिंह शेखावत, एडवोकेट,
बनीपार्क, जयपुर, मो. 9414465664

प्रार्थना पत्र का नमूना

प्रथम अपील
(सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 धारा 19 के अन्तर्गत)

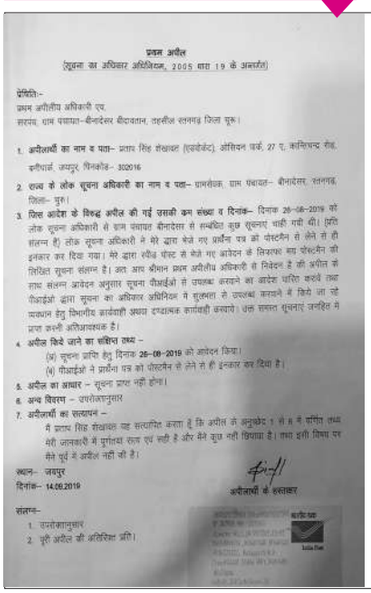

प्रेषिति:-
प्रथम अपीलीय अधिकारी एव
सरपंच, ग्राम पंचायत-बीनादेसर बीदावतान, तहसील रतनगढ़ जिला चूरु।

1. अपीलार्थी का नाम व पता- प्रताप सिंह शेखावत (एडवोकेट), ओसियन पार्क, 27 ए, कान्तिचन्द्र रोड, बनीपार्क, जयपुर, पिनकोड- 302016
2. राज्य के लोक सूचना अधिकारी का नाम व पता- ग्रामसेवक, ग्राम पंचायत- बीनादेसर, रतनगढ़, जिला- चूरु।
3. जिस आदेश के विरुद्ध अपील की गई उसकी क्रम संख्या व दिनांक- दिनांक 26-08-2019 को लोक सूचना अधिकारी से ग्राम पंचायत बीनादेसर से सम्बंधित कुछ सूचनाएं चाही गयी थी। (प्रति संलग्न है) लोक सूचना अधिकारी ने मेरे द्वारा भेजे गए प्रार्थना पत्र को पोस्टमैन से लेने से ही इनकार कर दिया गया। मेरे द्वारा स्पीड पोस्ट से भेजे गए आवेदन के लिफाफा मय पोस्टमैन की लिखित सूचना संलग्न है। अतः आप श्रीमान प्रथम अपीलीय अधिकारी से निवेदन है की अपील के साथ संलग्न आवेदन अनुसार सूचना पीआईओ से उपलब्ध करवाने का आदेश पारित करावें तथा पीआईओ द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम से सुलभता से उपलब्ध करवाने में [illegible] हेतु विभागीय कार्यवाही अथवा दण्डात्मक कार्यवाही करवाये। उक्त समस्त सूचनाएं जनहित में प्राप्त करनी अतिआवश्यक है।
4. अपील किये जाने का संक्षिप्त तथ्य -
(अ) सूचना प्राप्ति हेतु दिनांक 26-08-2019 को आवेदन किया।
(ब) पीआईओ ने प्रार्थना पत्र को पोस्टमैन से लेने से ही इन्कार कर दिया है।
5. अपील का आधार - सूचना प्राप्त नही होना।
6. अन्य विवरण - उपरोक्तानुसार
7. अपीलार्थी का सत्यापन -
मैं प्रताप सिंह शेखावत यह सत्यापित करता हूं कि अपील के अनुच्छेद 1 से 6 में वर्णित तथ्य मेरी जानकारी में पूर्णतया सत्य एवं सही है और मैंने कुछ नही छिपाया है। तथा इसी विषय पर मैंने पूर्व में अपील नही की है।

स्थान- जयपुर
दिनांक- 14.09.2019

अपीलार्थी के हस्ताक्षर

संलग्न-
1. उपरोक्तानुसार
2. पूरी अपील की अतिरिक्त प्रति।

द्वितीय अपील
(सूचना का अधिकार अधिनियम,2005 धारा 19(3) के अन्तर्गत)

प्रेषिति:-
मुख्य सूचना आयुक्त,
राजस्थान सूचना आयोग,जयपुर- राजस्थान।

1. अपीलार्थी का नाम व पता- प्रताप सिंह शेखावत एडवोकेट, ओसियन पार्क, 27 ए, कान्तिचन्द्र रोड, बनीपार्क, जयपुर, पिनकोड- 302016
2. राज्य के लोक सूचना अधिकारी का नाम व पता-
लोक सूचना अधिकारी एवं ग्रामसेवक, ग्राम पंचायत- बीनादेसर, रतनगढ़, जिला चूरु।
3. जिस आदेश के विरुद्ध अपील की गई उसकी क्रम संख्या व दिनांक-
सूचना प्राप्त करने हेतु आवेदन दिनांक 26.08.2019 को प्रस्तुत किया। पीआईओ द्वारा मेरे द्वारा भेजे गए प्रार्थना पत्र को पोस्टमैन से लेने से ही इनकार कर दिया गया। मेरे द्वारा स्पीड पोस्ट से भेजे गए आवेदन के लिफाफा मय पोस्टमैन की लिखित सूचना संलग्न है। जिसके उपरान्त मेरे द्वारा दिनांक 14.09.2019 को प्रथम अपील अधिकारी के समक्ष प्रथम अपील प्रस्तुत की। (अपील की प्रति संलग्न है।)
4. अपील किये जाने का संक्षिप्त तथ्य -
(अ) सूचना प्राप्त करने हेतु आवेदन दिनांक 26.08.2019 को प्रस्तुत किया।
(ब) लोक सूचना अधिकारी द्वारा डाक लेने से इनकार करने पर दिनांक 14.09.2019 को अपीलीय अधिकारी एवं सरपंच, ग्रामपंचायत बीनादेसर बीदावतान, तहसील-रतनगढ़, जिला-चूरू को अपील की गई। प्रथम अपीलीय अधिकारी ने प्रथम अपील पर आज दिनांक तक निर्णय नही किया है
(स) लोक सूचना अधिकारी द्वारा मेरे द्वारा भेजे गए प्रार्थना पत्र को पोस्टमैन से लेने से ही इनकार कर दिया गया। आज दिनांक तक मुझ प्रार्थी को सूचना उपलब्ध नही करवाई गई है। अतः आरटीआई एक्ट की धारा 20(1) व 20(2) के तहत पीआईओ के खिलाफ कार्यवाही कर, मुझे 25000/-रुपये हर्जा-खर्चा दिलाया जावे। तथा आरटीआई एक्ट की धारा 7(6) के तहत सम्पूर्ण सूचना मुझे निशुल्क उपलब्ध करवाया जावे।
5. अपील का आधार - सूचना प्राप्त नही होना।
6. अन्य विवरण - उपरोक्तानुसार
7. अपीलार्थी का सत्यापन-
मैं प्रताप सिंह शेखावत यह सत्यापित करता हूं कि अपील के अनुच्छेद 1 से 6 में वर्णित तथ्य मेरी जानकारी में पूर्णतया सत्य एवं सही है और मैंने कुछ नहीं छिपाया है। तथा इसी विषय पर मैंने पूर्व में अपील नहीं की है।

स्थान- जयपुर
दिनांक- 18.10.2019
संलग्न- उपरोक्तानुसार

अपीलार्थी के हस्ताक्षर

अपील दो प्रतियों में प्रस्तुत की गई है।

(पृष्ठ एक का शेष)

पूज्य तनसिंह...

बाड़मेर शहर तथा गुड़ामालानी प्रांत की शाखाओं के स्वयंसेवकों ने बाड़मेर शहर स्थित राजपूत मुक्ति धाम में पूज्य श्री तनसिंह जी के स्मारक पर प्रातः 5.15 बजे पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी प्रकार बालोतरा संभाग में बालोतरा प्रान्त में टापरा के नागणेची मन्दिर में प्रातः 8 बजे कार्यक्रम रखा गया। आवासन मंडल में विवेकानंद आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय में तथा बालोतरा शहर के श्री वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में शाम 05 बजे पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें प्रांतप्रमुख राणसिंह टापरा तथा वरिष्ठ स्वयंसेवक चंदनसिंह चांदेसरा उपस्थित रहे। जालोर संभाग में सांचोर के राव बल्लूजी राजपूत छात्रावास में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रांतप्रमुख महेन्द्र सिंह कारोला उपस्थित रहे। कुण्डल में निजी शिक्षण संस्था सरोज बाल निकेतन विद्यालय में भी पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें शिक्षण संस्था के संस्थापक व संघ के स्वयंसेवक मनोहरसिंह सिणेर द्वारा विद्यालय के छात्रों व शिक्षकों को तनसिंह जी व संघ की विचारधारा की जानकारी दी गई। पपुरना के शाकंभरी मंदिर में भी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें घनश्याम सिंह निर्वाण, हिम्मतसिंह कालोटा, विक्रमसिंह बनियाला, प्रमोद सिंह धामाला, मंजीत सिंह चिरानी सहित अनेकों युवा उपस्थित रहे।

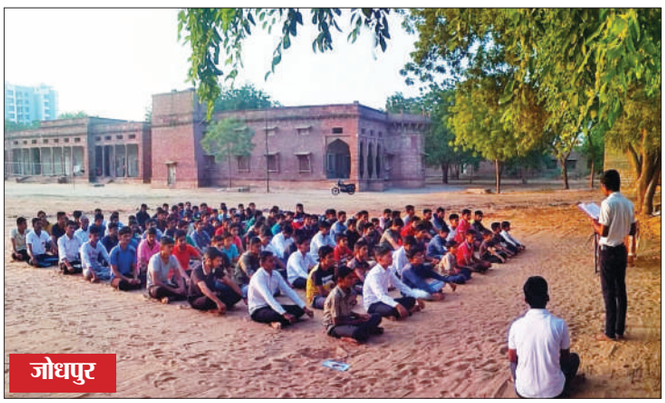
जोधपुर

इसी प्रकार बनासकांठा प्रान्त की शाखाओं द्वारा भी पुण्यतिथि मनाई गई। 07 दिसंबर को प्रातः 10 बजे पृथ्वीराज शाखा वलादर में, 11 बजे माँ करणी शाखा करबूण तथा शाम 05 बजे महाराणा प्रताप शाखा दियोदर में पुण्यतिथि मनाई गई। इस दौरान अजीतसिंह कुणघेर, शैलसिंह वलादर, डॉ प्रवीणसिंह वलादर, गजेंद्र सिंह नारोली, डूंगरसिंह रामसण, मंदीपसिंह माडका, महेंद्रसिंह गोलगाम आदि उपस्थित रहे। इसी प्रकार नागौर संभाग में साधना संगम संस्थान कुचामन सिटी के द्वारा पुण्यतिथि पर यथार्थ गीता पाठ का आयोजन किया गया। प्रातः 4:00 बजे से प्रारंभ होकर रात्रि 8:00 बजे तक गीता का अखंड पाठ श्री अरविंद जी स्वामी व उनके सहयोगियों के द्वारा किया गया। नागौर के अमर राजपूत छात्रावास में भी कार्यक्रम रखा गया तथा जायल मंडल के छापडा गांव की शाखा में भी पूज्य श्री की पुण्यतिथि मनाई गई। भिंयाड़ के मातेश्वरी गुरुकुल छात्रावास में भी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम रखा गया जिसे राजेन्द्र सिंह भिंयाड़, जयसिंह जानकी ने संबोधित किया। फलोदी प्रांत की बामणु शाखा में भी पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें भवानी सिंह पीलवा, कुम्भसिंह बामणु तथा लक्ष्मण सिंह बामणु ने उपस्थित समाजबंधुओं के सामने पूज्यश्री के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। इसी प्रकार जसवंतपुरा में तथा दईपड़ा खींचियान बाल शाखा में भी संस्थापक श्री की पुण्यतिथि मनाई गई। कल्याणपुर स्थित जगदम्बा राजपूत छात्रावास में भी पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें प्रान्त प्रमुख वीरम सिंह थोब तथा भंवर सिंह अराबा चौहान, सोहन सिंह कालेवा पंचायत प्रसार अधिकारी, छैल सिंह अराबा उड़ा, सरस्वती क्लासेस के निदेशक अजयपाल सिंह साथूनी, गणपत सिंह धर्मसर सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। इसी प्रकार गुजरात सूरत में सारोली स्थित वीर अभिमन्यु पार्क में भी पुण्यतिथि मनाई गई। जिसमें प्रांतप्रमुख खेतसिंह चांदेसरा उपस्थित रहे। कार्यक्रम को चैनसिंह सिराणा, विक्रमसिंह आकोली, श्यामसिंह मालूँगा, बाबूसिंह रेडा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के दौरान पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेडा द्वारा लिखित आलेख 'माँ के मुख से' का पठन हुआ तथा उपस्थित स्वयंसेवकों ने पूज्यश्री की तस्वीर पर पुष्प अर्पित किए। इसी प्रकार मुम्बई प्रान्त में भी विभिन्न शाखाओं में पुण्यतिथि मनाई गई। तनेराज शाखा में 'मां के मुख से' आलेख का पठन किया गया। नारायण शाखा भाईंदर में पूज्य श्री की जीवनी पर मौखिक प्रश्नोत्तरी रखी गई तथा 'गीता और समाजसेवा' पुस्तक के 'क्षात्रधर्म' अध्याय का पठन किया गया। इसी प्रकार वीर दुगार्दास शाखा मलाड तथा पृथ्वीराजसिंघोत शाखा में भी पुण्यतिथि मनाई गई। बीकानेर संभाग में श्री करणी राजपूत छात्रावास नोखा, श्री डूंगरगढ, पून्दलसर, झंझेऊ, विजय भवन, नारायण निकेतन, पंचवटी छात्रावास आदि स्थानों पर पुण्यतिथि मनाई गई जहां स्वयंसेवकों व समाजबंधुओं ने पूज्य श्री तनसिंह जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए। इसी प्रकार जैसलमेर के सोनू में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ, सेऊवा में भी प्रांतप्रमुख पदमसिंह रामगढ़ की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सिवाना भी श्री कल्ला रायमलोत राजपूत छात्रावास में पुण्यतिथि कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी, विधायक हमीरसिंह भायल, हनवंतसिंह मवड़ी, पन्नेसिंह राखी, ईश्वरसिंह पादरू सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

कुचामन सिटी

उदयपुर में राणा सांगा शाखा मैदान, बी एन कैंपस में पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें मेवाड़ -वागड संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला तथा मेवाड़ मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारडा उपस्थित रहे। इस दौरान 'मां के मुख से' आलेख का पठन किया गया। पारिवारिक शाखा ओसवाल नगर में भी कार्यक्रम रखा गया।

देपालसर की हेमकंवर को स्वर्णपदक

देपालसर गांव के नरेन्द्र सिंह राठौड़ की पुत्री हेमकंवर राठौड़ ने किशनगढ़ स्थित राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय से इंटीग्रेटेड एम.एस.सी.बी.एड. (फिजिक्स) में स्वर्ण पदक हासिल किया है। हेमकंवर को 3 दिसम्बर को युनिवर्सिटी में हुए छठे दीक्षांत समारोह में भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी (इसरो) के मुखिया के. सिवन और कुलाधिपति डॉ. के. कस्तुरीरंजन ने स्वर्ण पदक प्रदान किया। हेमकंवर ने 10वीं व 12वीं में चुरू के केन्द्रीय विद्यालय में टॉप किया था। जयपुर की महारानी कॉलेज से बी.एस.सी. में सभी विषयों में डिस्टिंक्शन हासिल की। छात्रा को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शगुन के रूप में लिया एक रुपया

देवली कलां (नागौर) के लोकेश राठौड़ ने मऊ (सीकर) निवासी बलवीरसिंह की पुत्री दुर्गेश कंवर से विवाह के अवसर पर मात्र एक रुपया व नारियल शगुन के रूप में लेकर अच्छा उदाहरण पेश किया है।

टीके व दहेज की पेशकश नहीं

दलेलपुरा (नागौर) के भंवरसिंह राठौड़ के पुत्र भानुप्रताप सिंह का तारपुरा निवासी जगमालसिंह की पुत्री कोमलकंवर के साथ विवाह बिना टीके एवं दहेज की पेशकश के संपन्न हुआ जो एक अच्छा उदाहरण है।

(पृष्ठ एक का शेष)

राजपूताना...

विशिष्ट अतिथि एवं राज्यसभा सांसद संजयसिंह ने संस्था का भवन बनाने हेतु दिल्ली सरकार से भूखण्ड दिलवाने एवं भवन निर्माण हेतु सांसद निधि से 25 लाख रुपए देने की घोषणा की। सभा को बुलेन युनिवर्सिटी लंदन के चौथी बार अध्यक्ष चुने गए रणजीतसिंह राठौड़ व जोधपुर विश्वविद्यालय के वर्तमान अध्यक्ष रविन्द्रसिंह भाटी ने भी संबोधित किया।

राजपूत...

उन्होंने कहा कि समाज के काम में हर व्यक्ति को अपनी भूमिका खोजनी चाहिए एवं तद्नुरुप क्रियाशील होना चाहिए। विशिष्ट अतिथि नारायणसिंह माणकलाव ने राजपूत शिक्षा कोष के बारे में जानकारी दी। मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा ने आपसी परिचय के लिए इन निर्देशिका को महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम में दिलीपसिंह उदावत, हनवंतसिंह बालोत, शंभूसिंह दुजाणा, डूंगरसिंह राठौड़, चैनसिंह बैठवास, सुरेन्द्रसिंह रूद आदि अधिवक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए। जलपान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सरदारसिंह गोकुल को मातृशोक

श्रीमती बाईसा कंवर

संघ के स्वयंसेवक सरदारसिंह गोकुल की माताजी एवं उगमसिंह, जेठमालसिंह, पूरणसिंह, चन्द्रवीरसिंह की दादीसा **श्रीमती बाईसा कंवर** का 4 दिसम्बर को देहावसान हो गया। परमेश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

तेजमालता बंधुओं को मातृशोक

श्रीमती ढेल कंवर

संघ के स्वयंसेवक भगवानसिंह तेजमालता भोजराजसिंह तेजमालता, महेन्द्रसिंह तेजमालता की माता **श्रीमती ढेल कंवर** पत्नी श्री सालमसिंह का 65 वर्ष की उम्र में 2 दिसम्बर को देहावसान हो गया। इनका पूरा परिवार संघ से जुड़ा है, तीन बड़े पुत्रों के अलावा दोनों छोटे पुत्र व पौत्र भी शिविरों में आते हैं। परमेश्वर शोक संतप्त परिवार को इस क्षति को सहन करने की क्षमता देवें एवं दिवगंत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

बाड़मेर नगर परिषद के

वार्ड संख्या 01 से नवनिर्वाचित पार्षद एवं उप सभापति **श्री सुरतानसिंह**,

वार्ड सं. 25 से नवनिर्वाचित पार्षद **श्री पबसिंह महेचा (पपसा)** पुत्र श्री पदमसिंह

व वार्ड संख्या 36 से नवनिर्वाचित पार्षद **श्रीमती प्रकाश कंवर महेचा**

सुपुत्री स्व. श्री मदनसिंह को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

श्री सुरतानसिंह	**श्री पबसिंह महेचा**	**श्रीमती प्रकाश कंवर महेचा**
उपसभापति व पार्षद	पार्षद	पार्षद
वार्ड संख्या 01	वार्ड संख्या 25	वार्ड संख्या 36

शुभेच्छु :

जोगेन्द्रसिंह चौहान, हरिसिंह महेचा, मगरसिंह खारा, रिडमलसिंह दांता, सवाईसिंह चोचरा, शैतानसिंह महाबार, महावीरसिंह रानीगांव, कृष्णसिंह राणीगांव, मेघराजसिंह खारा, नखतसिंह, दानसिंह संग्रामसर, शोमसिंह चोचरा।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org